दिनांक :- 16-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड प्रतिष्ठा इतिहास चतुर्थ

एकाई :- दो - अफीम युद्ध (1839, 1856)

चीनी अधिकारी ही व्यापार-शर्तों को निर्धारित करते थे जहाँ तक शुल्क का प्रश्न है, प्रायः यह काफी होता था किंतु, इससे प्राप्त आय का अल्पांश ही राजकोष में जमा होता था! शेष धनराशि कर वसूल करने वाले विभिन्न अधिकारियों के पेट में चली जाती थी! इसमें मैजिस्ट्रेट से वायसराय तक सम्मिलित थे! टनेज, आयात-निर्यात चुंगी, अनेक तरह के सेवा-शुल्क आदि आय के विभिन्न साधन थे।

विदेशी व्यापार चीनी अधिकारियों के लिए कामधेनु

गाय थी इससे अधिक लाभ कमाने के लिए उन्होंने एक एकाधिकार संगठन कायम कर लिया। 1702 में सम्राट का एक व्यापारी (Emperor's Merchant) एक मात्र एजेंट नियुक्त किया गया। इस पद पर राजस्व परिषद (Board of Revenue) के एक सदस्य हुपू को नियुक्त किया गया। वह कैंटन का सीमा शुल्क आयुक्त था। सभी विदेशी व्यापारियों को उसके द्वारा ही व्यापार करना पड़ता था। किन्तु यह व्यवस्था संतोषजनक नहीं थी अतः पचास वर्षों के बाद इसके स्थान पर को-हौंग नामक एक व्यापारिक संस्था कायम की गई। औपचारिक तौर पर 1771ई० में इसका उन्मूलन कर दिया गया, किंतु 1782 में इसे पुनर्जीवित किया गया जो 1842 तक बना रहा। विदेशी व्यापारी को-हांग द्वारा ही चीन में व्यापार कर सकते थे। को-हाँग कम से कम दाम पर वस्तुएँ खरीदता

था, लेकिन अधिक से अधिक दाम पर बेचते थे। विदेशी व्यापारियों तथा चीनी अधिकारियों के बीच को हांग एक मध्यस्थ-संगठन था। इसमें तेरह व्यापारी व्यापारी थे। वे विदेशी व्यापारियों तथा चीन के विभिन्न अधिकारियों के बीच एकमात्र माध्यम थे। को-हांग व्यापारियों के शिकायत-पत्र भी उनके द्वारा ही भेजे जा सकते थे। इस पत्रों को प्रार्थना-पत्र कहा जाता है। अन्य चीनी व्यापारी भी को-हांग द्वारा पदाधिकारियों का बहुत कम नियंत्रण रहता था। कारण यह था कि को-हांग छोटे बड़े सभी भूति व्यापारी कहा जाता था। वे विदेशी व्यापार का खूब लाभ उठाते थे। विदेशी व्यापारी कैंटन में रहते थे। उनका निवास स्थान नगर की दीवाल के बाहर था। वे गोदामों और को कारखाना कहा जाता हैं। वे गोदामों और कार्यालयों में रहते थे, जिन्हें वे कारखाना कहते थे।

Scanned with CamScanner

विदेशी फर्म के स्थायी प्रतिनिधि को आढ़तिया कहा जाता था। उसके नाम पर ही उनके कार्यलयों या गोदामों को कारखाना कहा जाता था। उसके नाम पर संस्थापन में विदेशी लिपिकों तथा अन्य सहायकों के अतिरिक्त एक विश्वस्थ चीनी भी था जो विदेशी व्यापारियों और प्रतिभूति व्यापारियों के बीच मध्यस्थ था। विदेशी व्यापारी चीनियों की सदिच्छा पर आश्रित थे। चीनी नौकर-चाकर अधिकार पूर्वक नहीं अपितु स्वेच्छा से उनकी सेवा करते थे। उनका भोजन-पानी चीनी नगर से आता था तथा उनके मनोरंजन के साधन सीमित थे। चीनी उन्हें बर्बर या निम्नकोटि का समझते थे। चीनी विनियमों और आइप्तियों में उन्हें अत्यंत निम्नकोटि का जीव-जंतु कहा गया था किंतु जो इन विनियमों आइप्तियों को जारी करते थे

उनका विदेशियों से बहुत कम सम्पर्क था!
को-हांग के व्यापारियों के साथ उनका बराबर सरो
कार रहता था अतएव उनके साथ उनका मैत्रीपूर्ण
संबंध था।
18वी शताब्दी के मध्य तक अंग्रेजों ने कैंटन के व्यापार
में अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया! 1715 में ईस्ट
इंडिया कंपनी ने कैंटन में अपनी उद्योगशाला कायम की थी।
व्यापार का अधिकांश भाग इसके नियंत्रण में था क्योंकि
अंग्रेजी व्यापार का एकाधिकार इसे ही प्राप्त था! अन्य
अंग्रेजी व्यापारी कंपनी से लाइसेंस लेकर ही व्यापार
कर सकते थे। कैंटन में कंपनी का प्रतिनिधि या अधीक्षक
प्रायः सभी विदेशी व्यापारियों के प्रवक्ता थे!
1784 के बाद कैंटन के विदेशी व्यापारी में अमरीका का
व्यापारियों ने दूसरा स्थान बना लिया! 1832 तक उनके सात
फर्म वहां कायम हो गए। ये फर्म पूरे अमरीकी

Scanned with CamScanner

व्यापार के लिए दलाल के रूप में काम करते थे।
यहाँ यह ध्यान देना है कि अमरीकी व्यापारी वहाँ निजी या व्यक्तिगत रूप से काम करते थे! अतः उन्हें अंग्रेज व्यापारियों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी किंतु, उन्हें अँग्रेजों की तरह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी जैसे शक्तिशाली संगठन का वरदहस्त प्राप्त नहीं था। यह ठीक है कि उनकी सहायता के लिए एक वाणिज्य दूत था, किंतु ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीक्षक की तुलना में वह अत्यंत कमजोर था। उसे तो अपने सहयोगी व्यापारियों पर भी नाममात्र का अधिकार था।
प्रारम्भिक व्यापार की एक विशेषता यह थी कि यह एक तरफा था। चीनियों को यूरोपीय वस्तुओं की कोई आवश्यकता नहीं थी! चीन के सम्राट ने लार्ड मैकार्टनी को व्यापार के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए

Scanned with CamScanner

बतलाया था, हमारे स्वर्गिक और दिव्य साम्राज्य में प्रत्येक वस्तु बहुतायत से उपलब्ध है। इस कारण हमें किसी वस्तु के आयात करने की आवश्यकता नही है जिस को हम निर्यात के बदले में बर्बर देशों में व्यापारियों से स्वीकार करें। यूरोपीय व्यापारी चीन के रेशम, चाय, रबर, सोयाबीन आदि खरीदते थे। विदेशी व्यापारियों के पास ऐसी कोई वस्तु नही थी जिसे वे चीन को बेच सकें। प्रारंभ में व्यापार का संतुलन चीन के पक्ष में था। चीनियों में यह भावना घर कर गई थी कि वे विदेशी व्यापारियों से जैसा चाहें, वैसा बर्ताव कर सकते है। यदि विदेशी व्यापार बन्द भी हो जाता तो चीनियों को कोई नुकसान न था। किन्तु इससे न केवल यूरोपीय व्यापारियों बल्कि उनके देशवासियों को भी नुकसान पहुँचने की संभावना थी। अतः वे चीन की हर व्यापारिक शर्त को मानने के लिए तैयार थे।

Scanned with CamScanner